नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

आधुनिक भारत के माथे पर एक धब्बा

पूर्णिया जिले के टेटमा गांव में एक ही परिवार के पांच लोगों को 'डायन' बताकर जिंदा जलाया जाना आधुनिक भारत के माथे पर एक शर्मनाक धब्बा है. यह घटना किसी एक परिवार की त्रासदी नहीं, बल्कि हमारे समाज की उस सामूहिक असफलता की गवाही है, जिसमें विज्ञान की उपलब्धियों की चमक के बीच अंधविश्वास का अंधेरा आज भी कई जीवन निगल रहा है.

आज भारत विश्वगुरु बनने की बात कर रहा है, चंद्रयान और गगनयान जैसे अभियानों पर करोड़ों का निवेश कर रहा है, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और क्वांटम कंप्यूटिंग की दिशा में अग्रसर है. लेकिन क्या इन वैज्ञानिक उपलब्धियों का कोई मतलब रह जाता है, जब हमारे गांवों में दो सौ से अधिक लोगों की भीड़, एक बीमार बच्चे के ठीक न होने की वजह से, एक पूरे परिवार को 'डायन' बताकर जिंदा जला देती है? यह घटना साफ़ दर्शाती है कि भारत में विज्ञान के विस्तार और वैज्ञानिक चेतना के विस्तार के बीच एक गहरी खाई है. हम रॉकेट तो बना रहे हैं, लेकिन समाज के भीतर वैज्ञानिक सोच नहीं बना पा रहे.

'डायन प्रथा' जैसी बर्बर कुप्रथा आज भी जीवित है, क्योंकि हमने शिक्षा को केवल परीक्षा पास करने का माध्यम बना दिया है, सोचने, तर्क करने और जिज्ञासा से सच्चाई तलाशने का अभ्यास नहीं सिखाया.यह घटना सवाल उठाती है कि आखिर हमारी स्कूल व्यवस्था, हमारे सामाजिक जागरूकता अभियान, और हमारे जनप्रतिनिधि इस अंधविश्वास से लड़ने में क्यों विफल हो रहे हैं? आज भी बिहार के हजारों गांवों में विज्ञान सिर्फ किताबों तक सीमित है. ग्रामीण स्कूलों में विज्ञान पढ़ाया तो जाता है, लेकिन विज्ञान की दृष्टि यानी आलोचनात्मक और तर्कपूर्ण सोच का विकास नहीं हो पाता.

क्या बच्चों को यह समझाया जा रहा है कि बीमारी किसी डायन के कारण नहीं, बल्कि बैक्टीरिया, वायरस, कुपोषण और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के कारण होती है? क्या हम गांवों में यह बात पहुँचा पा रहे हैं कि हर प्राकृतिक घटना का वैज्ञानिक कारण होता है और इसका हल किसी ओझा या तांत्रिक के पास नहीं, डॉक्टर और वैज्ञानिकों के पास होता है .

इस हत्याकांड की भयावहता और खुली बर्बरता इस बात की गवाही देती है कि लोगों के मन से पुलिस और कानून का भय खत्म हो चुका है.दो सौ से अधिक लोग एक परिवार को जला रहे हैं, और कहीं कोई प्रशासन, कोई हस्तक्षेप, कोई सुरक्षा नहीं है, यह 'राज्य विहीनता' की स्थिति है. सरकार की भूमिका केवल एफआईआर और मुआवजे तक सीमित रह गई है .हमें स्वीकार करना होगा कि यह लड़ाई केवल अपराध से नहीं, बल्कि अज्ञान, भय, और पीढ़ियों से चली आ रही कुचेतना से है. इसका जवाब केवल कानूनी कार्रवाई नहीं हो सकती, इसके लिए जमीनी स्तर पर एक सघन वैज्ञानिक चेतना अभियान चलाने की जरूरत है. हर पंचायत में 'विज्ञान क्लब' बनाए जाएं, जिसमें बच्चे, महिलाएं और बुजुर्ग भाग लें और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपने जीवन से जोड़ सकें .स्कूलों की पाठ्यपुस्तकों में अंधविश्वास विरोधी अध्ययन शामिल किया जाए और डायन प्रथा जैसी कुप्रथाओं के विरुद्ध खुलकर चर्चा हो. जन-स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा का गहरा आपस में समन्वय हो, ताकि बीमारी की दशा में लोग ओझा-तांत्रिक के पास नहीं, डॉक्टर के पास जाएं. पूर्णिया की यह घटना केवल दुखद नहीं, एक सामूहिक आत्मग्लानि का क्षण है.यह हमें याद दिलाती है कि अगर हम आधुनिकता और परंपरा के बीच सामंजस्य नहीं बना पाए, तो विज्ञान के मंदिरों से निकलकर भी हम अंधविश्वास के दलदल में फंसे रहेंगे.

अब समय आ गया है कि बिहार ही नहीं, पूरे देश में वैज्ञानिक चेतना को संविधान के मूल मूल्य की तरह देखा जाए, न कि एक वैकल्पिक विचारधारा के रूप में. जब तक विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं में रहेगा और समाज में उसका प्रभाव नहीं दिखेगा, तब तक ऐसी घटनाएं हमारी आत्मा को जलाती रहेंगी.

ग्वालियर चंबल डायरी

न्याय सत्याग्रह : कांग्रेस ने दिखा दी ताकत

हरीश दुबे

आठ जिलों की पुलिस तैनात करने, आम कार्यकर्ताओं से लेकर नेता प्रतिपक्ष और दर्जनों विधायकों के वाहनों की खानातलाशी लेने, होटलों और धर्मशालाओं को अधिग्रहित करने जैसी प्रशासनिक सख्ती के बावजूद कांग्रेस अशोकनगर में अपने तय कार्यक्रम के मुताबिक न्याय सत्याग्रह करने में कामयाब रही. जीतू पटवारी ने इस बड़े आंदोलन के जरिए अपनी राजनीतिक शक्ति दिखाने की कोशिश की लेकिन कमलनाथ, अजयसिंह और अरुण यादव जैसे नेताओं की इस आंदोलन में गैरहाजिरी ने पार्टी की गुटबाजी को भी जाहिर कर दिया.

चूंकि यह कार्यक्रम दिग्विजय और जयवर्धन के परंपरागत प्रभाव वाले जिले में था, तो इन दोनों को तो मौजूद रहना ही था. जयवर्धन ने खुद पूरे आंदोलन की कमान संभाली. दरअसल यह न्याय सत्याग्रह आयोजित ही जयवर्धन के अल्टीमेटम पर था. जीतू पटवारी बीते हफ्ते जब ओरछा के दौरे पर थे तब गजराज लोधी नामक युवक ने एक भाजपा कार्यकर्ता पर मारपीट करने और मैला खिलाने का आरोप लगाया था. बाद में यह युवक पलट गया और पटवारी पर ही बहकाकर भाजपा कार्यकर्ता के खिलाफ झूठी शिकायत कराने का इल्जाम लगा दिया, आनन फानन में मुंगावली थाने में पटवारी के खिलाफ एफआईआर दर्ज हो गई, यहीं से न्याय सत्याग्रह की व्यूहरचना तैयार हुई. जयवर्धन सिंह ने कह दिया कि यदि सात जुलाई तक एफआईआर वापस नहीं होती है तो आठ जुलाई को प्रदेश की पूरी कांग्रेस मुंगावली थाने पहुंचकर गिरफ्तारी देगी. कांग्रेस ने यह कर भी दिखाया लेकिन पूरी कांग्रेस नहीं पहुंची, पीसीसी चीफ के आह्वान पर भी आधी कांग्रेस ही अशोकनगर और मुंगावली पहुंची, प्रदेश के कई बड़े नेताओं से लेकर तमाम विधायक नदारद रहे.

बहरहाल, सरकार से लेकर प्रशासन तक को शुबहा था कि आंदोलन में जुटने वाली भीड़ बेकाबू होकर हालात बिगाड़ सकती है. भेदियों का इनपुट था, लिहाजा आंदोलन को कमजोर करने के लिए जरूरत से ज्यादा ही सख्ती बरती गई. फिर भी जीतू पटवारी अपनी ताकत दिखाने में कामयाब रहे. वर्षों से प्रदेश कांग्रेस पर वर्चस्व रखने वाली पुरानी पीढ़ी के अघोषित रिटायरमेंट के बाद 28 के चुनाव के लिए जीतू पटवारी खुद को पार्टी के एक छत्र नेता साबित करने के लिए अभी से मुस्तैद हैं.

सीएम ने फिर जगा दी जेसी मिल के आठ हजार मजदूरों में उम्मीद

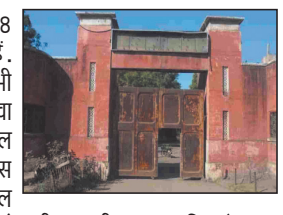

डॉ. मोहन यादव पहले मुख्यमंत्री हैं, जो जेसी मिल पहुंचे थे. यहां के 8 हजार श्रमिक और उनके परिवार बकाया भुगतान के इंतजार में हैं. उत्तरी मप्र की यह सबसे बड़ी कपड़ा मिल पिछले तीन दशक से भी ज्यादा वक्त से बंद पड़ी है. सरकार चाहे भाजपा की रही हो अथवा कांग्रेस की. अभी तक किसी भी मुख्यमंत्री ने यहां आकर मिल मजदूरों और उनके परिवारों की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास नहीं किया था. लेकिन आठ महीने पहले सीएम मोहन यादव ने मिल मजदूरों के बीच पहुंचकर उन्हें भरोसा दिलाया था कि जिस तरह इंदौर की बंद पड़ी हुकुमचंद मिल के आठ हजार मजदूरों के बकाया का निराकरण किया, इसी तर्ज पर जेसी मिल के मजदूरों को भी देनदारी मिलेगी. बहरहाल सूत्र बताते हैं कि प्रस्ताव तैयार किया जा चुका है. यह प्रस्ताव भोपाल जा चुका है, लेकिन संपत्ति बेचने का अधिकार शासन के पास नहीं है. इस कारण फंड एकत्रित नहीं हो पा रहा है. मिल के ऊपर 131 करोड़ की देनदारी बताई थी, जिसमें 8000 मजदूर और 8 बैंकों का बकाया शामिल है. महीने गुजरते गए लेकिन मजदूरों की आस पूरी नहीं हुई. इससे पहले कि पिछले करीब चार दशक से बेरोजगारी, गरीबी, भुखमरी झेल रहे मजदूर नाउम्मीद हों, सीएम ने बीते रोज राजधानी में आयोजित एक कॉन्क्लेव में एक बार फिर भरोसा दिया है कि ग्वालियर के जेसी मिल मजदूरों के बकाया का भुगतान इंदौर की हुकुमचंद मिल की ही तरह जल्द होगा. सीएम की ओर से दोबारा सकारात्मक संकेत मिलने के बाद मजदूरों की निराशा फिर आशा में बदल गई है. खबर तो यही है कि सीएम ने अधिकारियों को जेसी मिल के निराकरण के लिए लगा दिया है. इस क्षेत्र के विधायक और प्रदेश सरकार के ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर खुद पूरी प्रोसेस की मोनिटरिंग कर रहे हैं. मजदूरों को यकीन है कि जिस तरह सरकार ने इंदौर में हुकुमचंद मिल के मजदूरों को 300 करोड़ रुपए दिलवाये और 30 साल पुराना विवाद खत्म हुआ, ठीक वैसा ही ग्वालियर के जेसी मिल के मामले में होगा, उन्हें उनका हक मिलेगा और वह आर्थिक संकट से उबर सकेंगे.

गुरु पूर्णिमा : ज्ञान को आलोकित करने वाला पर्व

अर्जुन राम मेघवाल,
केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

> गुरु पूर्णिमा सीखने, ज्ञान अर्जन करने और कृतज्ञता व्यक्त करने का त्योहार है. सूचना की भरमार, भ्रम, तुलना और प्रतिस्पर्धा के इस युग में एक सच्चे गुरु की हमारे जीवन में उपस्थिति काफी महत्वपूर्ण है चाहे वह आध्यात्मिक गुरु हों अथवा कोई प्रशिक्षक, शिक्षा प्रदाता, माता-पिता या डिजिटल मार्गदर्शक क्यों न हों. उनकी उपस्थिति धर्म एवं धार्मिक अनुष्ठानों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है. 21वीं सदी के अनिश्चितता से भरे दौर में जबकि भू-राजनीतिक तनाव लगातार बढ़ रहे हैं, आतंकवाद, उग्रवाद, मादक पदार्थों की तस्करी, साइबर युद्ध और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ युवाओं को परेशान कर रही हैं, गुरुओं और संतों की ज्ञान परंपरा का उत्सव गुरु पूर्णिमा पूरी दुनिया के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है. आज के युग में लोगों द्वारा नैतिकता पर बिलकुल विचार नहीं करने एवं गलत और सही कार्यों के बीच अंतर नहीं कर पाने के कारण लोगों के सामने ढेर सारी चुनौतियां उत्पन्न हो रही हैं तथा सामाजिक ताना-बाना बिखर रहा है. ऐसे में गुरु की उपस्थिति मात्र से ही लोगों को गलत रास्ते पर जाने से रोका जा सकता है.

भारत की सांस्कृतिक विरासत हमें मानवीय मूल्यों से परिचित कराती है तथा ज्ञान और शाश्वत शिक्षा प्रदान करती है. इसका विविध एवं सर्वव्यापी स्वरूप सामूहिक चेतना को जागृत करता है जिसकी अभिव्यक्ति भारत में मनाए जाने वाले विभिन्न त्यौहारों के रूप में होती है. ये त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं हैं बल्कि ये हमारी प्रकृति के साथ जुड़ाव तथा वैज्ञानिक सोच एवं आध्यात्मिक चिंतन से जुड़े हैं.

गुरु पूर्णिमा एक ऐसा ही विशेष अवसर है जो हमें इतिहास में घटित घटनाओं के बारे में रूककर विचार करने और उन्हें समझने का अवसर प्रदान करता है. यह हमें यह जानने के लिए प्रोत्साहित करता है कि विगत की परिस्थितियों में अब क्या बदलाव आया है, किन बातों को हम अभी भी अपनाए हुए हैं और हमने अपने पीछे क्या कुछ छोड़ दिया है? हमने व्यक्ति के रूप में कितनी और सामूहिक रूप में कितनी उपलब्धियां हासिल की हैं? अपनाने और छोड़ने के इस दौर में हमारा साथ किन लोगों ने सबसे अधिक दिया? जीवन के उथल-पुथल एवं दुख से भरे समय में जबकि हमारा काफी अधिक पतन हो सकता था वैसे अस्थिर समय में किसने हमारा साथ दिया? ये सभी ऐसे प्रश्न हैं जिनके समाधान के लिए हमें गुरु या एक पथ-प्रदर्शक शक्ति की सर्वाधिक अहम भूमिका होती है चाहे वह कोई व्यक्ति हो, सिद्धांत हो या हमारे अंतर्मन की शक्ति हो जो हमारी जीवन यात्रा के दौरान सर्वाधिक शक्तिशाली मित्र के रूप में हमारा साथ निभाती है. समय की कसौटी पर खरे उतरे वे कौन से सिद्धांत हैं, जो हमें जीवन के पथ पर एक संतुलित यात्री बने रहने में सफल बनाते हैं. हमारे जीवन की इन सभी विविध परिस्थितियों के बीच प्राय: अदृश्य अथवा दृश्य, मूर्त या अमूर्त ऐसी शक्तियां होती हैं चाहे वो किसी पथ-प्रदर्शक का हाथ हो या कोई दिव्य विचार हो, मां का सानिध्य हो, शिक्षक के ज्ञान भरे शब्द हों या किसी मित्र का साथ हो जो हमारा पथ-प्रदर्शक बन जाता है. अत: गुरु पूर्णिमा ऐसे सभी शक्तियों को चाहे वह दृश्य हों अथवा अदृश्य, जो हमारा मार्गदर्शन करती हों, हमें सही रूप में ढालती हों और हमारे जीवन में उन्नति के पथ पर हमारा साथ देती हों, सभी को सम्मानित करने का एक पवित्र अवसर है.

गुरु पूर्णिमा का त्योहार व्यक्ति के जीवन और उसके सामाजिक मूल्यों को एक सही रूप में ढालने में गुरु की भूमिका को सम्मानित करने की एक शाश्वत परंपरा है. आसाढ़ मास की पूर्णिमा के इस दिन का गहरा आध्यात्मिक, ऐतिहासिक तथा सामयिक महत्व है क्योंकि इसी दिन आदिगुरु भगवान शिव ने सप्तऋषियों को योग का ज्ञान प्रदान किया था. इसी दिन महर्षि वेदव्यास की जन्म जयंती भी मनाई जाती है. इसके साथ ही, पूर्णिमा के दिन से चतुर्मास आरंभ होते हैं जो मानसून के दौरान के पवित्र चार महीने हैं जबकि साधु-संत किसी एक ही स्थान पर रहकर अपने शिष्यों को ज्ञान देते हैं. आसाढ़ मास की पूर्णिमा के बारे में ऐसा कहा जाता है कि इस दिन चांद के शीतल प्रकाश की ऊर्जा हमारे आंतरिक मन को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करती है. गुरु पूर्णिमा का यह त्योहार हमें उन लोगों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है जिन्होंने हमारे मन में ज्ञान की ज्योति जगाई है.

संस्कृत शब्द 'गुरु' दो शब्दों 'गु' (अंधकार) और 'रु' (हटाना) का संयोजन है जिसका अर्थ होता है एक ऐसा व्यक्ति जो हमारे मन से अंधकार अर्थात अज्ञानता को दूर करता हो. प्राचीन वैदिक परंपरा में गुरु शिष्य परंपरा शिक्षा का आधार थी. गुरुकुल में शिक्षार्थियों को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करके उन्हें विचारशील बनाया जाता था तथा नैतिकता का पाठ पढ़ाकर उनकी नैतिक दुविधाओं का समाधान किया जाता था. गुरुकुल में शिक्षा की यह प्रक्रिया शिक्षार्थियों को कर्म के माध्यम से मूल्य आधारित जीवन जीने व चरित्र निर्माण करने के लिए निरंतर प्रेरित करने की प्रक्रिया थी.

ब्रिक्स देशों पर ट्रंप की टेढ़ी नजर

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की सफलता से तिलमिलाए अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप ने धमकी दी. जो भी देश ब्रिक्स की अमेरिका विरोधी नीतियों के साथ खड़ा होगा उस पर 10 प्रतिशत अतिरिक्त टैरिफ लगाया जाएगा. ट्रंप ब्रिक्स को अमेरिका विरोधी संगठन मानते हैं. उन्हें भय है कि ब्रिक्स देश डॉलर के मुकाबले अपनी नई कॉमन करेंसी जारी कर सकते हैं, जिससे अमेरिका की इकोनॉमी को नुकसान होगा. ब्रिक्स में ब्राजील, रूस, भारत, चीन व द. अफ्रीका जैसे देश शामिल हैं. 2023 में ईरान, सऊदी अरब, यूएई, मिस्त्र, इंडोनेशिया व इथियोपिया भी ब्रिक्स में सम्मिलित हो गए. अमेरिका 9 जुलाई को ऊंची टैरिफ दरें घोषित करेगा जो कि 1 अगस्त से लागू हो जाएंगी. ब्रिक्स सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी ने पश्चिमी देशों द्वारा वैश्विक दक्षिण देशों के साथ अपनाए जा रहे दोहरे मानदंडों की आलोचना की. जिसे अन्य सहयोगी राष्ट्रों का समर्थन मिला. उन्होंने कहा कि वैश्विक संस्थाएं इन देशों की आवाज अनसुनी करती हैं. विश्व की जीडीपी में वैश्विक दक्षिणी देशों का योगदान अब लगभग 45 प्रतिशत है जो कि 1990 में केवल 19 प्रतिशत था. अमेरिका की धमकी पर चीन ने जवाब दिया कि ब्रिक्स किसी देश से टकराव नहीं चाहता, न किसी को टारगेट करता है. व्यापार और टैरिफ युद्ध में कोई विजेता नहीं होता. प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि अपने व्यक्तिगत या राजनीतिक लाभ के लिए आतंकवाद को मूक सहमति देना कदापि स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए. चीन को भी इस बात पर सहमत होना पड़ा. ब्रिक्स के मंच से भारत ने चीन और पाकिस्तान को स्पष्ट संदेश दिया. ट्रंप की ब्रिक्स से भले ही नाराजगी हो लेकिन भारत तो अमेरिका के साथ क्वाड संगठन का भी सदस्य है वह ब्रिक्स के प्लेटफार्म का उपयोग वैश्विक असमानताओं के समाधान के उद्देश्य से करता है न कि अमेरिका विरोध के लिए. ब्रिक्स सम्मेलन में चीन के राष्ट्रपति शी जिन पिंग की अनुपस्थिति से भारत को अपनी कूटनीतिक पहल मजबूत करने और वैश्विक दक्षिण के मुद्दों पर नेतृत्व की छाप छोड़ने का मौका मिला. प्रधानमंत्री मोदी ने दुर्लभ खनिजों की सप्लाई चेन को सुरक्षित रखने तथा एआई का दुरूपयोग रोकने पर भी बल दिया.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

पटक-पटक कर मारने का चैलेंज बयान होने लगे सनसनीखेज

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, हमें लगता है कि राजनीति कुश्ती का अखाड़ा बनती जा रही है जिसमें नेता पहलवानों के समान ताल ठोककर चुनौती देने लगे हैं कि आजा मैदान में! आ देखें जरा, किसमें कितना है दम!

हमने कहा, सभी जानते हैं कि कुश्ती हो या राजनीति, दोनों में दांवपेंच होते हैं. अलग-अलग पार्टियों के नेता अखाड़े के उस्ताद या खलीफा के समान होते हैं और वह अपने पट्टे तैयार करते हैं. कुश्ती में लंगी, धोबी पछाड़, ढाक जैसे दर्जनों दांव होते हैं. मिट्टी के अखाड़े की कुश्ती मैट तक आ गई है लेकिन आज भी कोल्हापुर, दिल्ली, पटियाला के पहलवान मिट्टी के अखाड़े में चित-पट वाली कुश्ती लड़ते हैं. ओलंपिक और कॉमनवेल्थ गेम्स में मैट पर ग्रीको-रोमन शैली की कुश्ती खेली जाती है, जो फास्ट होती है. इसके अलावा डब्ल्यूडब्ल्यूएफ में फ्री स्टाइल कुश्ती होती है. इस मारामारी वाली कुश्ती को आप मोबाइल में भी देख सकते हैं. यह मिलीजुली या नूराकुश्ती मानी जाती है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, हमने सलमान खान की

फिल्म सुलतान और आमिर खान की फिल्म दंगल में कुश्ती के मुकाबले देखे हैं लेकिन इस समय राजनीतिक अखाड़े में बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे ने चुनौती देते हुए कहा है कि राज ठाकरे अगर बहुत बड़े बॉस हैं तो वे महाराष्ट्र से बाहर आने की हिम्मत दिखाएं. हम हिंदी का विरोध करने वालों को पटक-पटक कर मारेंगे.

हमने कहा, माहौल गर्म करने के लिए इस तरह का चैलेंज दिया जाता है. वैसे गरजने वाले बादल बरसते नहीं हैं. यह तो बोलने की बातें हैं कि पटक-पटक कर या दौड़ा-दौड़ा कर मारेंगे.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, पटकने की बात से याद आया कि पं. मदनमोहन मालवीय ने बनारस में विश्वविजयी गामा पहलवान का सत्कार करवाया था. वहां महात्मा गांधी भी मौजूद थे. जब गामा से बोलने को कहा गया तो वह बोले- हम पहलवान तो दूसरे पहलवान को पटकते हैं. महात्मा गांधी ने तो अंग्रेजी सरकार को ही पटक दिया. यह किस्सा बनारसीदास चतुर्वेदी ने अपने संस्मरणों में लिखा है.

हमने कहा, आज की उठापटक वाली राजनीति में पटकने या पटकनी देने में बीजेपी सबसे आगे है जिसने दशकों से जारी रही कांग्रेस की चैम्पियनशिप छीन ली है.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11958 - डॉ. सागर खादीवाला

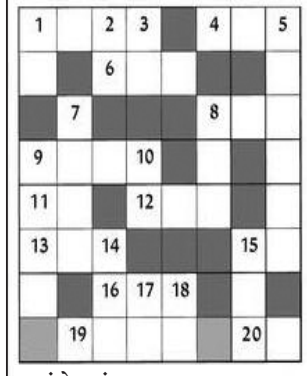

ऊपर से नीचे =
1. वह शक्ति जो अधिकार बल या सामर्थ्य का उपयोग करके अपना काम करती है, सात बूटियों वाला ताश का पत्ता
2. शिव का वाहन, बैल
3. औषध
5. चमक
7. चित्र बनाने की विद्या
8. पवन, हवा
9. इंद्र, अग्नि, शिव, घर में सेंध लगाने वाला (सं.)
10. प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि
14. वृक्ष का कटा हुआ कोई भाग, काठ
15. बबूल नामक वृक्ष
17. बच्चा, पुत्र, बेटा
18. जंगल, युद्ध, रण

बाएं से दाएं
1. वह जो सदा आनंद में रहे, शिव, विष्णु (सं.)
4. दिनकर, सूर्य
6. पागल
8. नीच, पापी
9. जिसके पुत्र हो, पुत्र वाली
11. भिक्षुक, दरिद्र, धनहीन
12. दुरुह, दुर्बोध, जटाधारी
13. मध्यस्थ, पारिश्रमिक लेकर सौदा खरीदने या बेचने में सहायता देने वाला व्यक्ति
15. कीड़ा-मकोड़ा, जमी हुई मैल
16. नदी या समुद्र के किनारे की भूमि
19. कोचवान, गाड़ी चलाने वाला
20. खराब या निकम्मा ठहराया हुआ, परिवर्तित
धारना

Solution 11957

1 ए	2 क	व	च	3 न		4 भ	5 व
6 क		ज		7 शा	8 ह	ज	हाँ
न	9 ल	ह	10 ती		11 स	न	
12 र	ब		13 का	14 य	र		15 स
फा		16 अ		17 म	त	18 ल	ब
	19 आ	च	20 म	न		21 ह	क
22 सु	धा	र	ना		23 सौ	रा	
24 धी	र	ज		25 खो	फ	ना	क

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यवसाय में लाभ होगा, पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा, यात्रा का योग है, वर्ष के मध्य में नारी पक्ष से सहयोग मिलेगा, आर्थिक लाभ होगा, किसी विशेष कार्य से लाभांवित होने का अवसर प्राप्त होगा, वर्ष के अन्त में सिर दर्द अनिद्रा जैसे रोगों से कष्ट हो सकता है, जल्दबाजी में वाहन न चलायें, तनाव रहेगा, घरेलू कार्यो में व्यस्तता बनी रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को लाभांवित होने का योग है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को घरेलू कार्यो में नारी पक्ष से आर्थिक संकट हो सकता है, कर्क राशि के व्यक्तियोंको व्यस्तता रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को सिर दर्द अनिद्रा जैसे रोगों से कष्ट हो सकता है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को यात्रा का योग है, मकर और कुंभराशि के व्यक्तियों को रूकावटों के बाद सफलता मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को कार्य में व्यस्तता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, होशियार होगा. सर्विस की ओर अधिक झुकाव रहेगा. कार्यकुशल तथा परिश्रमी होगा. मित्रों की संख्या सीमित रहेगी. जन्म स्थान से दूर रहकर अपनी उन्नति करेगा.

मेष- युवाओं को कैरियर में आ रही परेशानियों से छुटकारा मिलेगा. वाकपटुता पर नियंत्रण रखें. मित्रता उपयोगी रहेगी. परिश्रम अधिक करना होगा.

वृषभ- अपनी ताकत का इस्तेमाल विरोधियोंको रोकने में करना पड़ेगा. वाहनादि का सुख प्राप्त होगा. भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी. मित्रवर्ग आपकी मदद करेंगे.

मिथुन- व्यर्थ के झगड़े में आपका समय बर्बाद हो सकता है. मांगलिक खर्च संभव है. अतिथि आगमन होगा. हर्ष बना रहेगा. पूज्य व्यक्ति की सलाह लाभदायक सिद्ध होगी.

कर्क- रूकी हुई योजनाओं में गति आयेगी. कार्य विस्तार की संभावना है. आत्म विश्वास एवं मनोबल बना रहेगा. इच्छितकार्यों की पूर्ति होगी.

सिंह- दूसरों की आलोचना से घबराकर कार्य योजना बीच में ही छोड़ सकते हैं. सोचे हुये कार्यो में सफलता के योग है. मित्रों एवं सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा.

कन्या- आप बेहतर तरीके से काम निपटाने का प्रयास करेंगे. सहयोगी आपका विरोध कर सकते है. व्यापार व्यवसाय में लाभ सामान्य ही रहेगा.

तुला- थोडी परेशानी के बादजूद आपकी सफलता सुनिश्चित है, सामाजिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. यश, मान सम्मान प्राप्त होगा.

वृश्चिक- मन में चल रही उलझन आपको फैसला लेने में रोकेगी. राजकीय कार्योंमें सफलता मिलेगी. लाभदायक योजना की रूपरेखा पर विचार विमर्श होगा.

धनु- बुजुर्गो के स्वास्थ्य संबंधी चिन्ता रहेगी, जोखिम केकार्यो से दूर रहें. आवेश में लिया गया निर्णय नुकसानदायक रहेगा. व्यापारिक समस्याओं का समाधान होगा.

मकर- कड़ी मेहनत से शानदार परिणाम मिलेंगे, अनावश्यक टकराव छोड़कर काम पर ध्यान दें. मित्र के संबंध में शुभ समाचार मिलेगा.

कुम्भ- रूकी हुई योजना फिर से शुरू करने का मन बनेगा. पारिवारिक सुख तथा सौहार्द बना रहेगा. नवीन योजनाओं का शुभारंभ होगा.

मीन- नए कारोबार में निवेश की संभावना बनेगी. पारिवारिक मामले उलझने से चिन्ता होगी. अपव्यय पर नियंत्रण रखें. संपत्ति वाहनादि का सुख प्राप्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

पंचांग

रा.मि. 19 संवत् 2082 आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा गुरूवासरे रात 1/49, मूल नक्षत्रे प्रात: 5/16, ऐन्द्र योगे रात 10/55, विष्टि करणे सू.उ. 5/15 सू.अ. 6/45, चन्द्रचार धनु, पर्व-स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा, गुरू पूर्णिमा, शु.रा. 9,11,12,3,5,7 अ.रा. 10,1,2,4,6,8 शुभांक-2,4,8.

व्यापार भविष्य

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को मूल नक्षत्र के प्रभाव से मैथी धनियां, हल्दी, जीरा, आदि में तेजी होगी. सोना, चांदी, शेयर आदि में मोती, बिनौला, लोहा, में तेजी का रूख रहेगा. आज वायदा विचार में मंगल के बने भाव घटें, उसी में तेजी होगी. भाग्यांक 1599 है.

SUDOKU 7090

4					1	9		
						8	5	
			7	3				
			3				4	7
9								2
8	5				6			
				5	8			
	7	4						
		6	2					5

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7089

2	4	5	6	9	8	1	7	3
1	7	6	4	3	5	8	2	9
3	8	9	1	2	7	6	5	4
9	1	7	3	6	2	4	8	5
5	6	3	8	7	4	9	1	2
4	2	8	5	1	9	3	6	7
7	3	1	9	5	6	2	4	8
8	9	2	7	4	1	5	3	6
6	5	4	2	8	3	7	9	1